# नवगीत के पुरोधा की जन्मशती

हिन्दी कविता के इतिहास में बीसवीं सदी के छठे दशक की एक कुग्राहिता के प्रति प्रबुद्ध मानस सदैव चौंकता रहेगा। यह प्रश्न उसके मन में बार-बार कौंधेगा क्यों आखिर क्यों भारतीय काव्य परम्परा के छान्दस नैरन्तर्य को नकार दिया गया ? क्यों गीत लिखना पिछड़ेपन की निशानी मान ली गई ? क्यों आयातित आधुनिकता की भित्ति पर कविता को पाठ्य और केवल पाठ्य होने का नारा दिया जाने लगा ? शायद 'तारसप्तक' से लेकर आज तक के अधिकांश कवि जो इस राह के राही हैं या रहे हैं उनमें जीवन के जटिल यथार्थ को, आधुनिक वैज्ञानिक बौद्धिकता को छन्दों में बाँधने की या उसके बन्धन को ढीला कर अभिव्यक्ति में लयात्मक 'कण्टेण्ट' लाने की क्षमता ही नहीं थी। इस बात को सिद्ध किया डॉ० शम्भुनाथ सिंह ने। उन्होंने गीत धारा में रचना रत रहकर उसी को युग सापेक्ष नवीनता और आधुनिकता के बोध से भरकर एक ओर जीवन में मनुष्य के अन्त:करण में स्थायी और अमिट सहज भावों को अपनी रचनाओं के माध्यम से रुपायित किया तो जीवन की जटिलता, उसकी अन्त: संघर्षात्मकता और वैज्ञानिकता बोध के परिणामस्वरूप उत्पन्न तमाम घात-प्रतिघातों को खण्डित, प्रातिभ, वैज्ञानिक और सांकेतिक विम्बों द्वारा ऊँकेरने का प्रयास किया। किन्तु गीतात्मकता जरा सा भी समाप्त नहीं हुई।

शम्भुनाथ सिंह ने अज्ञेय, मुक्तिबोध, रघुबीर सहाय जैसे तमाम 'नयी कविता' वादियों द्वारा सृजित नयी कविता के समानान्तर नवगीत विधा का नवोन्मेष किया और उन्हें चुनौती दी कि आधुनिक, वैज्ञानिक, यांत्रिक आयामों को यदि छन्दों के बन्धन को ढीला कर देने के बाद भी कोई कवि उसे छान्दस भावों में नहीं बाँध सकता तो यह कवि की अक्षमता है, छन्द की नहीं। इसलिए उन्होंने सर्वप्रथम इलाहाबाद में 'परिमल' द्वारा आयोजित 'नयी कविता' की संगोष्ठी में नयी कविता के मंच से ही अपनी रचना का पाठ 'नवगीत' कहकर किया जिसे जगदीश गुप्त, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता और विजयदेव नारायण साही का समर्थन भी मिला। इस प्रकार नयी कविता के मंच से ही शम्भुनाथ सिंह ने मौखिक रूप से नवगीत शब्द का प्रवर्तन कर दिया। यह उस समय एक स्वाभाविक प्रक्रिया थी क्योंकि अज्ञेय तब तक इस प्रकार के गीतों के विरोधी नहीं थे और ऐसे गीतों को नयी कविता का गीत कहते थे। उन्होंने ऐसे नवगीतों को तारसप्तक, 'दूसरा सप्तक' और तीसरा 'सप्तक' में प्रकाशित भी किया था। आगे चलकर नयी कवितावादियों ने गीत लिखना, गीतों को प्रकाशित करना और उन पर चर्चा करना बन्द कर दिया। प्रकाशन संस्थानों, पत्र-पत्रिकाओं में उनका ही वर्चस्व था। अत: गीत छपना बड़ी पत्रिकाओं में बन्द हो गया।

शम्भुनाथ सिंह ने इस चुनौती को स्वीकार किया। यद्यपि वे छठें दशक तक नयी कविता से भी जुड़े रहे और देश की लब्ध प्रतिष्ठ पत्रिकाओं में उनकी नयी कविताएँ प्रकाशित भी होती रहीं। उनकी ऐसी कविताएँ उनके काव्य-संग्रह 'माध्यम मैं' (1957) और 'खण्डित सेतु' (1966) में प्रकाशित हैं। 'माध्यम मैं' में 'सोंधी प्रतिध्वनियाँ' नामक खण्ड है, जिसमें 14 गीत हैं, जो नवगीत का बीजारोपण करते हैं। इन गीतों में लोक चेतना, आंचलिकता, ग्राम बोध लोकधुन और विम्बों की सघनता इसे उस युग का नवगीत घोषित करती हैं। इस प्रकार नवगीत का प्रारमभ नयी कविता के जुड़वाँ भाई की तरह 'नयी कविता' के आंचलिक बोध को आत्मसात किए हुए होता है। आगे चलकर छठे और सातवें दशक में वह जीवन की विसंगतियों, अन्तर्द्वन्द्वों, अपरिचय बोध, टुटन, घुटन, संत्रास, पीड़ा, आत्मनिर्वासन, यांत्रिकता, वैज्ञानिकता और आधुनिकता बोध को रुपायित करने लगता है। शंभुनाथ सिंह का काव्य-संग्रह 'जहाँ दर्द नीला है' (1977) उक्त विशिष्टताओं से परिपूर्ण पहला नवगीत संकलन है जो छन्दमुक्त कविता की अतिशय बौद्धिकता और फन्तासी मूलकता के विरुद्ध आधुनिकता बोध वाला सहज ग्राह्य और सम्प्रेषणीय संग्रह है। यह संग्रह कथ्य और शिल्प दोनों की नवीनता, विम्बधर्मिता और लाक्षणिकता, व्यंजनात्मकता, अनलंकृति और सादगी भरी सम्प्रेषणीयता द्वारा समकालीन जीवन की जटिलता को उद्घाटित करता है। इस प्रकार शम्भुनाथ सिंह आधुनिकता बोध वाले नवगीत के सर्जक और प्रवर्तक हैं।

यद्यपि कि किसी एक व्यक्ति ने न तो नयी कविता का प्रवर्त्तन किया है और न ही नवगीत का। दोनों के पीछे बहुतों का समवेत प्रयास है क्योंकि किसी भी विधा का प्रवर्त्तन किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं होता किन्तु वह केन्द्र अवश्य प्रवर्त्तक कहलाता है जो विधा विशेष के लेखन और उसे स्वीकृत दिलाने के लिए विशिष्ट प्रयास करता है। इस दृष्टि से नयी कविता के केन्द्र में अज्ञेय हैं तो नवगीत के केन्द्र में शम्भुनाथ सिंह।

शम्भुनाथ का संघर्ष कई मायनों में अज्ञेय से महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि अज्ञेय का संघर्ष चुनौती निरपेक्ष लगता है। अज्ञेय ने कविता की वाचिक परम्परा को उखाड़ फेंकने का प्रयास किया। छान्दस परम्परा के विरुद्ध छन्दमुक्त कविता को प्रतिष्ठापित किया। इस प्रकार उनकी चुनौती केवल छन्द, नाद यानी गीत के प्रति थी। जबकि शम्भुनाथ को नवगीत को प्रतिष्ठापित कराने के लिए एक ओर पारम्परिक गीतों और उसकी लिजलिजी भावुकता से संघर्ष करना पड़ा तो दूसरी ओर नयी कविता की छन्दमुक्तता से। इस प्रकार शम्भुनाथ सिंह को छन्दमुक्त कवियों की कड़ी चुनौती के साथ उन नादान दोस्तों की चुनौती का भी सामना करना पड़ा जो नवगीत को बिना जाने समझे स्वयं की और अपने खेमे के 'फेक' रचनाकारों को नवगीतकार घोषित करने लगे।

शम्भुनाथ सिंह ने अनेक संगोष्ठियों, पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों और पूरे देश में नवगीत योजनाओं द्वारा नवगीत की पहचान स्थिर कराने का प्रयास किया। उन्होंने 'नवगीत दशक' के तीन खण्डों का प्रकाशन कराया जिनमें बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध के दस-दस नवगीतकारों के दस-दस नवगीतों को संकलित किया गया है। प्रत्येक खण्ड के ये दस नवगीतकार नवगीत की कसौटी पर कसकर तब चयनित हुए। ताकि 'जेनुइन' और 'फेक' नवगीतकारों का अन्तर स्पष्ट हो सके। इस प्रयास में उन्होंने छन्दमुक्त कविता के उन कवियों को प्रतिष्ठित करने वाले समीक्षकों को चुनौती दी जो गद्य की पंक्तियों को तोड़-तोड़ कर कुछ भी लिख देने, पहेली बुझा देने, ऊल-जलूल संलाप आदि को कविता कह रहे थे। कविता के नये प्रतिमान गढ़ रहे थे और यूरोप में बने तीसरे दशक के कविता प्रतिमानों और काव्य चिन्तन को आधार मान रहे थे। इस प्रकार आयातित कविता और समीक्षा जो पश्चिम और भारत के परिवेश और परिस्थिति को समझे बिना चाय में बुरादे की तरह मिलाई जा रही थी। शम्भुनाथ ने उसका प्रतिकार किया। नवगीत की भारतीय काव्य-परम्परा और चिन्तन को लेकर अकवितावादी, विचारधारा के प्रतिलोम नवगीत के समीक्षकों का नया वर्ग बनाया। नवगीतकारों को उन्होंने नवगीत की समीक्षा के लिए प्रेरित किया और अनेक प्रातिभ

समीक्षकों को नवगीत की समीक्षा हेतु तार्किक परिणति तक पहुँचाया। इनके अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप नवगीत साहित्य में प्रतिष्ठापित हो गया। विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों तथा शोधार्थियों के शोध का विषय बना किन्तु अब भी वह पूर्वाग्रहियों के दुराग्रह का शिकार बना हुआ है। उनके निधनोपरान्त कुछ फेक और व्यवसायी तथाकथित कवियों ने नवगीत का झण्डा उठाकर अपना-अपना खेमा बनाकर नवगीत का पुरस्कर्त्ता होने का दम भरना शुरू कर दिया है। ऐसे लोग कुछ अफसरों और गाँठ के पूरे लोगों से पैसा लेकर उनके गीत छापकर समवेत संकलन (जिसमें सैकड़ों लोग संकलित हैं) प्रकाशित कराया है। इन्हीं छपास प्रेमियों को वे अपने द्वारा सम्पादित ऐसी पुस्तकें (हजारों के मूल्य की) व्ही०पी० द्वारा भेज देते हैं और स्वयं को नवगीत का मसीहा लिख मारते हैं। जेनुइन नवगीतकारों और सुधीर समीक्षकों को इस प्रवृत्ति को रोकना होगा।

शम्भुनाथ सिंह से प्रभावित और प्रेरित नवगीतकारों की एक बड़ी परम्परा देश में विद्यमान है। अनेक प्राध्यापक और अनुसन्धाता उनको केन्द्र में मानकर नवगीत पर कार्य कर रहे हैं। बीसवीं सदी के अन्तिम दशक में उमड़े अनेक जेनुइन नवगीतकार लिख रहे हैं जिनमें ओम धीरज, हिमांशु उपाध्याय, रविशंकर पाण्डेय, मधु शुक्ला, जय चक्रवर्ती, शिवकुमार पराग, ओमप्रकाश तिवारी और इन पंक्तियों का लेखक प्रमुख है।

उनके जन्मदिवस 17 जून की इस जन्मशती पर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी नवगीत के निकष, उसके वैशिष्ट्य, उसकी प्रवृत्ति और कविता की सार्थकता के प्रति उसके आग्रह को अभिव्यक्ति देने वाले संकलन के प्रकाशन की। 'शब्दबीज' उनकी जन्मशती पर होने वाले आयोजन पर इस संकल्प को सच्ची श्रद्धांजलि मानता है और ऐसे संकलन के प्रकाशन का आग्रह करता है।

**इन्दीवर**